-: द्वितीय अध्याय :-

"गुनाहों का देवता" उपन्यास की कथावस्तु

द्वितीय अध्याय

"'गुनाहों का देवता' उपन्यास की कथावस्तु"

कथावस्तु उपन्यास का प्रमुख एवं अनिवार्य तत्व है। "कथावस्तु को उपन्यास का प्राण कहा गया है। जिन उपकरणों से मिलकर सारे उपन्यास की कहानी बनती है उन्हें उपन्यास की कथावस्तु कहा जाता है।[१]" यदि उपन्यास को उपन्यास बनाना है तो उसके कथानक का महत्व अस्वीकार नहीं किया जा सकता। उपन्यासकार का प्रथम कर्तव्य है, कि वह अपनी कथावस्तु निरूपण करते समय जीवन के प्रति सच्चा चित्र प्रस्तुत करे। कथावस्तु चुनने की एक मात्र कसौटी यह है कि वह जीवन को समग्र और स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत करें।

कथानक में तीन गुणों का होना आवश्यक है -- रोचकता, संभाव्यता और मौलिकता। रोचकता लाने के लिए कौतूहल का निर्माण आवश्यक है। ना.सी. फड्के ने कथानक की श्रेष्ठता का आधार कौतूहल मानते हुए कहा है कि वह पर्वत-यात्रा के समान होना चाहिए। "जिस तरह पर्वत-यात्री एक चोटी पर पहुँचने के बाद, मार्ग के एक मोड पर पहुँचने के उपरान्त, दूसरे दृश्य को देखने के लिए आतुर एवं उत्साहित हो उठता है, उसी प्रकार उपन्यास का पाठक भी कथा लिए एक मोड पर पहुँचने के बाद आगे की कथा के सम्बन्ध में जिज्ञासा अनुभव करें।" [२]

"उपन्यास का मुख्य कथानक सदा केन्द्रीय और प्रमुखता की स्थिति में होना चाहिए। उपन्यासकार अपने लक्ष्य के अनुसार उसका निर्माण करता है। उद्देश्य के अनुरूप कथानक क्रमबध्दता और विस्तार प्राप्त करता है।" [३] भारती जी ने अपने

---

१ डा. मैथिलीप्रसाद भारद्वाज - 'पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिध्दान्त' - पृ.३८०-३८१।

२ डा. शान्तिस्वरूप गुप्त - 'पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिध्दान्त' - पृ.३६२-३६३।

३ डा. शान्तिस्वरूप गुप्त - 'उपन्यास: स्वरूप, संरचना तथा शिल्प' - पृ.७०-७१।

विशिष्ट उद्देश्य को लेकर कथानक का गठन किया है। उनके उपन्यास 'गुनाहों का देवता' का प्रारम्भ और अन्त निश्चित-सा है।

"'गुनाहों का देवता' की कथावस्तु"

डा.धर्मवीर भारती जी ने इस उपन्यास में ऐसे असाधारण पात्रों का निर्माण किया है जो सामान्य से सामान्य होते हुए भी अपने कर्मों के बलबूतेपर असामान्य हो जाते हैं। मध्यवर्गीय जीवन की एक ऐसी झलक को धर्मवीर भारती जी ने अपने उपन्यास में दिखाने का प्रयत्न किया है कि, भले ही पढ-लिखकर आदमी वैचारिक शान्ति महसूस करता हो, वह मानसिक शान्ति की खोज में हमेशा भटकता ही रहता है।

सिर्फ डेढ़ साल के अवकाश में चन्दर, सुधा, डा. शुक्ला, बिनती, पम्मी, गेसू, बर्टी आदि के जीवन में आये तूफ़ान को धर्मवीर भारती जी ने समेटकर ४०० पन्नों में बाँध देने का प्रयास किया है। इस डेढ़ साल के समय में किस तरह इन पात्रों को पूरी तरह पीस दिया है, विचारों और भावनाओं के अंतर्द्वंन्द्व में किस तरह फँस जाते हैं, जिनसे निकलना उन्हें मुश्कील होता है, इसका अत्यंत सुन्दर चित्रण लेखक ने अपनी सहज, सुन्दर भाषा में दिया है।

इस कथानक की सबसे प्रमुख कथा चन्दर और सुधा की है। इसके साथ-साथ अन्य भी कथाएँ इसमें सम्मिलित है, जिन्होंने मुख्य कथा में सहयोग दिया है। इनमें से कुछ अंत तक साथ चलती हैं लेकिन कुछ बीच में ही शुरु होकर बीच में ही विलीन भी होती है। इन्हें हम निम्नलिखित प्रकारों से विभाजित कर सकते हैं --

मुख्य कथा - चन्दर और सुधा से सम्बध्द कथा।
गौण कथाएँ(१)- चन्दर और पम्मी से सम्बन्धित कथा।
(२) चन्दर और बिनतीसे सम्बन्धित कथा।
(३) गेसू और अख्तर से सम्बन्धित कथा।
(४) बर्टी से सम्बन्धित कथा।
(५) डा. शुक्ला से सम्बन्धित कथा।
(६) बिनती की बुआ से सम्बन्धित कथा।

(७) कैलाश से सम्बन्धित कथा ।

इनमें से चन्दर और बिनती की कथा मुख्य कथा के साथ अंत तक सहयोग देने में सफ़ल हुई है ।

इलाहाबाद के वर्णन के साथ इस उपन्यास की शुरूवात होती है । चन्दर कपूर इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है,जो अपने माता से झगड़कर प्रयाग भाग आया है और बी.ए.में पढते वक्त उसकी परिस्थिति से अवगत होकर उसके सिनीयर टीचर डा.शुक्ला ने उसे अपना लिया है । यह जानकर कि,चन्दर की अँग्रेजी अच्छी है, डा.शुक्ला उससे छोटे-छोटे लेख लिखवाकर पत्रिकाओं में भेज देते हैं । एक तरह से वह उनके परिवार का सदस्य बन जाता है, इतना ही नहीं वे उसे अपना बेटा ही मानते हैं । चन्दर इतना शर्मिला था कि,बी.ए.में युनिवर्सिटी में प्रथम आने के बावजूद वजीफ़े के लिए प्रयास नहीं करता है,एम.ए.में उसे इक्नॉमिक्स विभाग ने युनिवर्सिटी के आर्थिक प्रकाशनों का वैतानिक संपादक बना दिया है । एम.ए.में सर्व प्रथम आने के बाद वह रिसर्च शुरू करता है । कॉलेज जीवन से लेकर रिसर्च पूरी करने तक और उसके बाद भी डा.शुक्ला चन्दर को मदद करते रहते हैं ।

जब डा.शुक्ला युनिवर्सिटी से हटकर गवर्नमेण्ट साइकोलॉजिकल ब्यूरो में चले जाते हैं तब उनकी बेटी सुधा गाँव से सातवी पास करके शुक्ला के साथ रहने और अगली पढ़ाई पूरी करने के लिए आ जाती है क्योंकि गाँव में आगे की शिक्षा का प्रबन्ध नहीं है । तब से चन्दर और सुधा में जो अपनापन होता गया और कैसे सुधा के भावविश्व में चन्दर का स्थान एक देवता के समान हो गया और साथ ही कैसे सुधा भी चन्दर के मन-मानसपर छाती गयी इसका पता उन दोनों को भी नहीं चलता है । जब सुधा गाँव से आयी थी,तब वह बहुत शर्मिली,भोली, जिद्दी थी । चंदर से डरती थी फिर भी गाँव से आने के दो साल तक वह उपद्रव करती रही फिर न जाने क्यों चन्दर जब पापा के साथ उसकी सुलह करने आता है तब उसके इशारे से ही चुप हो जाती है । चन्दर उसे चाहे जितना चिढ़ाए अब वह उसके सामने ढ़ीठ होकर बोलती है । लेखक कहता है -- "उसका सारा विद्रोह , सारी झुंझलाहट,मिजाज की सारी तेजी,सारा तीखापन और सारा लड़ाई-झगड़ा,

सभी तरफ से हटकर चन्दर की ओर केन्द्रित हो गया था[१]।" सबके लिए वह शान्त, सुशील, विनम्र बन गई लेकिन चन्दर को देखते ही वह फिर बच्ची बन जाती है। लेखक ने इस उपन्यास में ऐसी घटनाओं का उल्लेख किया है जब सुधा चन्दर के साथ झगड़ती है और उससे रूठकर वह अपने पापा से शिकायत करती है। पाप से उसे डाँट दिलवाती है तभी वह मान जाती है। चन्दर उसे हमेशा चिढ़ाता रहता है और वह उस पर खफ़ा होकर भी उसकी हर बात मान जाती है।

वह अपने आप पर ही गुस्सा निकालती है और सोचती है - "सचमुच चन्दर पर सुधा को गर्व है और उसी चन्दर से वह लड़-झगड़ लेती है, इतनी मान-मनुहार कर लेती है और चन्दर सब बर्दाश्त कर लेता है, वरना चन्दर के इतने बड़े-बड़े दोस्त हैं और चन्दर की इतनी इज्जत है। अगर चन्दर चाहे तो सुधा की रत्तीभर भी परवाह न करे लेकिन चन्दर सुधाकीभली-बुरी बात बरदाश्त कर लेता है।" [२]

वह सोचती है कि, अगर चन्दर ने पढ़ाने के लिए मास्टर को ले आने का वादा किया है तो उसे वह पूरा करना ही चाहिए। अगर उसने अपने वापस आने का निश्चित वक्त बता दिया है, तो उसे उसी वक्तपर आना चाहिए। उसके पापा उसपर जो प्यार उँड़ेलते हैं वह सब का सब दुलार वह अपने चन्दर पर लुटा देती है। वह उसका अपने पापा से भी बढ़कर खयाल रखती है। उसने चाय में दूध कम लिया, खाना कम खाया, दूध न पिया तो वह उसे डाँट भी देती है। वह चाहती है कि, मास्टर जी जब उसे पढ़ाते है तब चन्दर भी उसके साथ रहें।

एक दिन डा. शुक्ला अपने निबन्ध के पन्ने टाईप कर लाने के लिए चन्दर के पास देते है जो कि, मिस प्रमिला डिक्रूज से टाईप कर लाने हैं यही से मुख्य कथानक में प्रमिला की कथा का अंतर्भाव होता है।

प्रमिला डिक्रूज की शादी हो चुकी है लेकिन अपने पति के साथ अनबन की वजह से वे दोनों अलग हो गये है। उसके पति अब रावलपिण्डी में आर्मी में है।

---

१ डा. धर्मवीर भारती - 'गुनाहों का देवता' - पृ. ११।

२ वही वही पृ. ७८-७९।

प्रमिला डिक्रूज के यहाँ चन्दर के पहुँचनेपर उसे महसूस हुआ कि, वह बंगला एकदम शान्त है। उसके पुकारने पर भी कोई नहीं आया तो वह फूल देखने लगा। अचानक एक कमजोर गोरे ने उसे पकड़ लिया। वह प्रमिलाका भाई बर्टी था। उसकी पत्नी एक सार्जेण्ट के साथ भाग जाने के कारण वह पागल बन गया था और उस पागलपन के कारण वह अपनी पत्नी को फूलों में ढूँढने में व्यस्त रहता है। उसे लगता है कि, उसकी पत्नी इन्हीं फूलों में छिप गई है। जब उसे मालूम हुआ कि, उसके फूल चन्दर ने नहीं चुराये हैं और प्रमिला को जब उसकी सही पहचान हो जाती है तब वह बहुत शरमिंदा हो जाती है। वह चन्दर से माफी माँगती है। फिर उसने टाईप करना शुरु किया और बातों-बातों में उसने चन्दर को अच्छा इन्सान कहकर उसे अपना दोस्त बना लिया। उसने अपनी सारी जानकारी चन्दर को बता दी कि, उसने पति को छोड़ क्यों दिया ? अब वह अकेली क्यों रहती है ? कैसे उसने अपने आप को उस बंगले में कैद कर दिया है, आदि आदि। उसने चन्दर से कहा कि, वह उसे 'पम्मी' कहकर पुकारें। टाईप का काम पूरा होनेपर फिर मिलने का वादा देकर चन्दर वापस चला आया।

सुधा और चन्दर में इतना अपनापन था और दोनों में इतना मनमुटाव है कि, चन्दर सुधा को हर एक बात बताता था, जो वह अनुभव करता है। उसने पम्मी के बारे में भी सब कुछ बता दिया। यहाँ तक कि, बाद में जब कभी पम्मी और चन्दर घूमने जाते, उसके साथ उसने जो वक्त बिताया उस सब के बारे में वह सुधा को बताये बिना नहीं रह सकता है। बाद में तो सुधा उसे चिढ़ाती भी थी लेकिन चन्दर के दिल में एक ही श्रध्दा का स्थान था और वह था 'सुधा' ! इसलिए वह उससे कोई भी बात छुपा नहीं पाता है।

इसी बीच सुधा के कॉलेज की बात आती है जहाँ उपन्यासकार ने हमारा परिचय गेसू से करवाया है। गेसू सुधा की सहेली है जो उसके साथ पढ़ती है। वह शहर के एक मशहूर रईस साबिर हुसैन काजमी की बड़ी लड़की है। वह अख्तर के साथ पढ़ती, खेलती आयी है। उन दिनों का यह साथ जवानी में अलग रंग लाता है और उन दोनों में प्यार हो जाता है। गेसू और अख्तर की मंगनी होनेवाली

है इसलिए वह खुश है। गेसू और सुधा दोनों कॉलेज के पीछे, पेड़ के नीचे रंगीन सपने देखती है और शेरों - शायरियाँ पढ़ती रहती है। गेसू और अख्तर की कथा आगे चलकर एक नया मोड़ लेती है और गेसू चन्दर के लिए राह दिखानेवाली मार्गदर्शक बन जाती है।

चन्दर और डा.शुक्ला कॉन्फरेन्स के लिए लखनऊ जाते हैं। सुधा बेसब्री से उसके खत का इंतजार करती है और न आने पर इतनी बेकरार हो उठती है कि, खाना छोड़ देती है। कभी चन्दर को, कभी पापा को और कभी खुद को भी कोसने लगती है। एक दिन प्रमिला डिक्रूज सुधा के पास आ जाती है और बताती है कि - "रहने दीजिए, मैं सिगरेट छोड़ रही हूँ।" "क्यों ?" "इसलिए कि कपूर को अच्छा नहीं लगता और अब वह मेरा दोस्त बन गया है, और दोस्ती में एक-दूसरे से निबाह ही करना पड़ता है।" [१]

पम्मी चन्दर की तारिफ करती है तो उसके जाने के बाद सुधा खुद को कोसती रहती है। उसे चन्दर की यादें सताने लगती है। इसी वजह से उसके आने के बाद वह उसे कुछ भी नहीं बोलती है। उसके आने की खुशी ही इतनी है कि, इंतजार के पलों का जिक्र तक नहीं करती।

डा.शुक्ला के आने के दूसरे दिन बिनती और बुआ जी आ जाती है। वह इलाहाबाद के निकट बरेली नाम्क गाँव की है। बचपन में सुधा भी इस बुआ के पास रहती थी। चन्दर और बिनती का परिचय हो जाता है। पहले तो बिनती उससे सकुचाती है फिर वही पढ़ती है और इतनी ढ़ीठ हो जाती है कि, चन्दर से बहस करने लगती है। उसे समझाने की चेष्टा भी करती है। उसकी माँ उसे सताती, है, किसी भी काम मे जरासी गड़बड़ हो जाए तो बुआजी बरस पड़ती थी। बिनती को जब दूबे जी अपने बेटे की शादी के लिए देखने आते है तो बिनती उनकी सेवा करती है, इसी बात पर चन्दर और सुधा उसे चिढ़ाने लगते है। पहले तो वह बात नहीं करती थी परंतु जैसे-जैसे उन दोनों के करीब जाती गई, एक दिन उसने इसका कारण ही दिया -- "आप समझते होंगे कि, मैं ब्याह के लिए उत्सुक हूँ, दीदी भी

---

१ डा.धर्मवीर भारती - 'गुनाहों का देवता' - पृ.७६

यही समझाती है,लेकिन मेरा ही दिल जानता है कि, ब्याह की बात सुनकर मुझे कैसा लगने लगता है लेकिन फिर भी मैंने ब्याह करने से इन्कार नहीं किया। खुद दौड़-दौड़कर उस दिन दुबेजी की सेवा में लगी रही, इसलिए कि,आप देख चुके है कि माँ का व्यवहार मुझसे कैसा है ? आप यहाँ इस परिवार को देखकर समझ नहीं सकते कि, मैं वहाँ कैसे रहती हूँ,कैसे माँ जी की बातें बरदाश्त करती हूँ वह नरक है मेरे लिए,माँ की गोद नरक है और मैं किसी तरह निकल भागना चाहती हूँ। कुछ तो चैन मिलेगा।"[१] इसके बाद चन्दर और सुधा उसे कभी ब्याह के लिए नहीं चिढ़ाते हैं और इन तीनों में अच्छा मेल-मिलाप हो जाता है। यहाँ तक कि, जब सुधा की शादी हो जाती है तब सुधा बिनती को चन्दर का खयाल रखने के लिए कहती है।

अपने लड़के को शादी तय करने आये दूबे जो बिनती के लिए बुआ के पास शगुन के पाँच रूपये देकर चले जाते है जिससे बुआ जी सख्त नाराज हो जाती है। इसी बीच सुधा की शादी की बात चलती है,उसकी फोटो लड़केवाले पसंद करते है। लेकिन वह शादी के लिए तैयार ही नहीं है। वह हमेशा इन्कार करती है और जब उसकी इच्छा के विरुध्द सिर्फ चन्दर के कहनेपर वह शादी करने के लिए राजी हो जाती है किन्तु वह सुखी नहीं हो सकी।

इसी बीच चन्दर डेढ़ महिना लगातार बैठकर अपना थीसिस लिखकर पूरा करता है। इस वक्त न वह सुधा को ओर अधिक ध्यान देता है,न बिनती की ओर तथा न डा.शुक्ला की ओर। सुधा की इम्तिहान कब हो गयी यह भी उसे मालूम नहीं होता है। ७ मई को वह अपना थीसिस लिखकर पूरा करता है तब उसके जान में जान आ जाती है। इसी बीच उसने 'उत्तर प्रान्त में माता और शिशुओं की मृत्युसंख्या' पर जो निबन्ध लिखा, उसके लिये उसे प्रांतीय सरकार का पदक मिल जाता है।

तभी डा.शुक्ला चन्दर को सुधा की शादी तय हो जाने के बारे में बताते हुए कहते हैं --"जेठ दशहरा को लड़के का भाई और माँ देखने आ रही है। और बहन

---

१ डा.धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ.१२२।

भी आयेगी गाँव से।"[1] लड़का शाहजहाँपुर का है, जमींदार लोग हैं, लड़का एम. ए. है आदि बाते भी बताते हैं। फिर जैसे ही वह सुधा को पदक दिखाने जाता है तो देखता है कि, सुधा घर में नहीं है। वह बिनती से बातें करने लगता है।

सुधा के आने के बाद गेसू, हसरत, गेसू की छोटी बहन फूल वहाँ आ जाती है। वे सब दूसरे दिन गर्मियाँ बिताने नैनीताल जाते हैं। गेसू की मँगनी वही होनेवाली है और जुलाई तक निकाह होगा। इसलिए उसकी बिदाई में सुधा के यहाँ उसकी दावत है। वहाँ गेसू गजल सुनाती है, परंतु वह मुसलमान होने के कारण परदा रखती है और इसी वजह से उसकी चन्दर से मुलाकात नहीं हो सकती इसलिए चन्दर दूर से उसकी गजल सुनता है। इसी बीच बिनती ने सुधा के भावी पति की तस्वीर चन्दर को चुपके से दिखा दी और उसे सुधा को दिखाने की जिम्मेदारी भी चन्दर पर ही ड़ाल दी। चन्दर उस लड़के को पहचानता है। वह कामरेड कैलाश मिश्र है जो सामाजिक आन्दोलनों में सक्रीय सहभाग लेता है। चन्दर समझ नही पा रहा है कि, कैसे सुधा को बताये कि, तुम इस लड़के से शादी कर लो। उसने सुधासे पहले वादा लिया कि, वह जो कहेगा, सुधा उसे मान लेगी। सुधा ने उसे वचन दिया कि, वह उसकी हर बात मान लेगी। तो उसने बताया, सुधा, जिस लड़के की तस्वीर तुमने देखी है, उससे तुम शादी कर लो। सुधा ने इन्कार किया तो वह उसे वादा याद दिलाता है। सुधा इतनी गुस्सा हो गई कि कहने लगी - "वायदा कैसा ? तुम कब अपने वायदे निभाते हो ? और फिर यह धोका देकर वायदा करना क्या ? हिम्मत थी तो साफ़-साफ़ कहते हम से ! हमारे मन में आता सो कहते। हमें इस तरह से बाँधकर क्यों बलिदान चढ़ा रहे हो[2]।" और वह रोने लगी। चन्दर के समझ में नही आता कि, उससे क्या कहें। सुधा क्रोध में बड़बड़ाने लगती है -- "पापा ने भी धोखा दे दिया। हमें पापा से यह उम्मीद नहीं थी[3]।" साथ ही वह सोचती है कि, उसके चन्दर ने भी उसे धोखा दिया है। चन्दर उसके इस तरह बकने पर चिढ़ जाता है और वह उसे एक तमाचा मारता है। वह स्तब्ध हो जाती है।

---

१ डा. धर्मवीर भारती - 'गुनाहों का देवता' - पृ. १४४।

२ वही वही पृ. १३४।

३ वही वही पृ. १३५।

फ़िर चन्दर से वह कहती है -- "चन्दर, देखें तुम्हारे हाथ में चोट तो नहीं आयी।"[१] फिर वह चन्दर के पैरों से लिपटकर बोली - "चन्दर, सचमुच मुझे अपने आश्रय से निकालकर ही मानोगे! चन्दर, मजाक की बात दूसरी है, जिन्दगी में तो दुश्मनी मत निकाला करो।"[२]

चन्दर उसे तब तक समझाता रहता है जब तक वह हार कर शादी के लिये 'हाँ' नहीं करती है। वह उससे कमजोर, कायर न बनने के लिए कहता है। पापा का और खुद का भी विचार करने के लिए कहता है। सुधा पहले इन्कार करती रहती है पर अन्त में जाकर वह मान जाती है। लेकिन उसके मान जाने से न ही सुधा, न ही बिनती और न ही खुद चन्दर खुश होता है। सभी एक दूसरे की ओर ताकते रह जाते हैं। घर जाकर भी चन्दर ठीक नहीं होता। उसी तरह उदास बैठा रहता है। दूसरे दिन सुबह सुधा के पास जाने की उसकी हिम्मत नहीं होती है। लेकिन शाम के पाँच बजते ही वह बेचैन हो उठता है और सुधा के पास चला जाता है। सुधा खुद को कष्ट देने के लिए भरी दोपहर गैरेज में मोटर ठीक कर रही है। चन्दर के समझाने पर वह घूमने जाती है। चन्दर, सुधा और बिनती आदि सभी पम्मी के घर जाते हैं और वहाँ सुधा पम्मी से कविता सुनने की इच्छा प्रकट करती है, लेकिन कविता सुनते-सुनते अचानक वहाँ से सुधा चल पड़ती है और दूसरे दिन उसे बुखार आ जाता है। वह उटपटांग बातें करने लगती है। वह चन्दर को भी चले जाने के लिए कहती है। फिर थोडी देर में वह ठीक भी हो जाती है। वह यहाँ तक भी कहती है कि, "चन्दर! आज बीमार हूँ तो कुरसी उठा रहे हो, मर जाऊँगी तो अरथी उठाने भी आना, वरना नरक मिलेगा! समझे न!"[३] और उसने चन्दर से कई सवाल किये कि, मैं अगर मजबूत नहीं हूँ, तो यह मेरा अपराध तो नहीं है? लेकिन मैं अब वैसी बनूँगी जैसा तुम चाहते हो। फिर उसके बाद उसने अपने चन्दर के प्रति प्यार की बात कही लेकिन उसने यह भी कहा -- "यह न तुमसे छिपा है न मुझसे कि तुमने मुझे जो कुछ दिया है वह प्यार से कहीं ज्यादा ऊँचा और प्यार से भी कहीं ज्यादा महान है।"[४]

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ. १३६।
२ वही वही पृ. १३६।
३ वही वही पृ. १५६।
४ वही वही पृ. १५७।

फिर भी वह अपने उस गम से बाहर न निकली । उसके शादी की सारी भाग-दौड चन्दर ने की । जिस दिन कैलाश के बड़े भाई सुधा को देखने आते है उसी दिन वहाँ पम्मी भी आती है और मसूरी जाने की बात कहकर चली जाती है । सुधा को कैलाश मिश्र के बड़े भाई शंकर बाबू कैलाश के लिए पसंद करते है और महिने के अन्दर शादी करने की बात करते है । तैयारी शुरु हो जाती है । सुधा लोगों के सामने खुश रहने का नाटक करने लगती है और अंदर ही अंदर कुढ़ती रहती है । चन्दर के पास इतना भी वक्त नहीं बचता है कि, उसे समझाये । जब भी मौका मिलता है वह उसे समझा देता है ।

सिर्फ आठ लोगों की बारात आती है । इसलिए उनके रहने का बंदोबस्त घर में ही किया जाता है । शादी मे भी सुधा वचन कहने से इन्कार करती रहती है और चन्दर के समझाने पर सुधा अपने आप को कैलाश को समर्पित कर देती है । बिनती रो पड़ती है और चन्दर बरदाश्त न कर सोने चला जाता है । सुधा बिदाई के वक्त चन्दर की पूजा करती है और घर को मानो पूरा खाली करवाकर चली जाती है ।

एक हप्ता चन्दर शुक्ला के घर नहीं जाता है । लेकिन जब जाता है तब बिनती को सम्भालने का काम उसे करना पड़ता है । सुधा जाते ही चन्दर को खत लिखती है और बताती है कि, वहाँ सब कुछ अच्छा होने के बावजूद भी दु:खी ही है । फिर चन्दर बिनती के साथ सुधा की कमी को महसूस कर उसके दु:ख बाँटता रहता है । वह बिसरिया (जो सुधा और बिनती का मास्टर और चन्दर का दोस्त है) के काव्य संग्रह का 'बिनती' नाम बदलवा देता है । चन्दर बिनती से घुल-मिल जाता है । फिर भी उसे सुधा की याद सताती रहती है । पंद्रह दिन में अगर सुधा का खत न आये तो वह बेचैन हो जाता है ।

एक दिन वह पम्मी के खत के अनुसार उसके भाई बर्टी से मिलने जाता है । बर्टी जेनी को मसूरी से ले आया है और उससे शादी करना चाहता है । वह उस पर अधिकार जताती है । वहाँ बर्टी चन्दर को बताता है -"एक औरत उसी चीज को ज्यादा पसन्द करती है, उसी के प्रति समर्पण करती है जो उसको जिन्दगी में नहीं होता । मसलन एक औरत है जिसका ब्याह हो गया है, या होनेवाला है ।

उसे यदि एक नया प्रेमी मिल जाये तो उसकी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहता। वह अपने पति की बहुत कम परवा करेगी अपने प्रेमी के सामने।[१]" वह मानता है कि यह लडकियों के सेक्स जीवन का अन्तिम सत्य है। इससे चन्दर इतना विचलित हो जाता है कि, सुधा ने खत में जो भी कुछ लिखा उसे वह नाटक समझाने लगता है। उसको वह कोरी भावुकता कहता है। जब सुधा आती है तब भी वह उससे खुलकर नहीं मिलता है। थोडे दिन तो वह अपने आप को जब्त कर जाता है। परंतु जाते वक्त सुधा उसे कहती है -- "चन्दर, तुम ब्याह मत करना। तुम इसके लिए नहीं बने हो[२]।" साथ ही वह कहती है -- "चन्दर तुम ऐसे ही रहना। तुम्हें मेरे प्राणों की सौगन्ध है, तुम अपने को बिगाड़ना मत।"[३] तब चन्दर भी उसे आश्वासन देता है - "नहीं सुधा, तुम्हारा प्यार मेरी ताकत है। मै कभी गिर नहीं सकता जबतक तुम मेरी आत्मा में गुँथी हुई हो।"[४] फिर भी सुधा के जाने के बाद भी उसके दिल मे यही विचार है कि, सुधा दु:ख और अंर्तद्वंन्द्व का स्वांग भरती है और यही विचार वह बिनती से भी कह डालता है। बिनती उसे देहाती जीवन का तत्व बताती है -- "वहाँ इतना दुराव, इतना गोपन नहीं है। सभी कुछ उनके जीवन का उन्मुक्त है। और ब्याह के पहले ही वहाँ लडकियाँ सब कुछ ...।"[५]

फिर चन्दर विचारों के आवर्त में फँस जाता है। वह तटस्थ बन जाता है। फिर वह सुधा के बारे में अपने दिल में जो भावना थी उसे अधकचरे मन की उपज, आदर्शवादी भावुकता, सनक कहने लगता है।

बिनती को भी शादी के लिए गाँव जाते वक्त वह लताड़ ही देता है, जिससे बिनती के दिल को गहरी चोट पहुँचती है। सुधा का खत आता है तो वह उसे

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ. २१२।
२ वही वही पृ. २२५।
३ वही वही पृ. २२५।
४ वही वही पृ. २२५।
५ वही वही पृ. २२९।

खत न लिखने के लिए लिखता है।

एक बार फिर पम्मी वहाँ आ जाती है और अपने सौन्दर्य के आवरण से वह उसे ढँक देती है। वह सौन्दर्य के बल पर चन्दर को मोहित कर लेती है और चन्दर उसके सौन्दर्य जाल में खिंचता चला जाता है। सेक्स को बुरा माननेवाली पम्मी चन्दर को बताती है कि "कपूर, सेक्स इतना बुरा नहीं जितना मैं समझाती थी।" [१] और वह उसमें बह जाता है। पम्मी के संपर्क और संभोग के बाद चन्दर का उद्विग्न मन शान्त होता है और वह बिनती के प्रति अपने क्रोधभरे व्यवहार को संयत बनाता है। चन्दर जो अनुभव करता है वह बिनती से कह देता है - "पम्मी ने आज अपने बाहुपाश में कसकर जैसे मेरे मन की सारी कटुता, सारा विष खींच लिया।" [२]

एक दिन डा. शुक्ला वापस आ जाते हैं। बिनती की शादी उसके ससुराल वालों के झगड़े आदि की वजह से टूट गई है। बुआ नाराज हो जाती है। बिनती में अब एक विचित्र तड़प और चीख, क्रोध दिखाई देने लगती है। वह माँ से भी उल्टे-सीधे जवाब देने लगती है। अब वह आगे पढ़ने लगती है। जब चन्दर बिनती से माफ़ी माँगता है तो बिनती स्वाभिमान की बात करने लगती है। चन्दर उस स्वाभिमान को तोड़ने की बात सोचने लगता है और वह पम्मी के पास जाकर पूरा समर्पण कर आता है।

आते ही वह बिनती से प्यार से बाते करता है और बिनती की ममता को छू लेता है। बिनती अपना अभिमान भूल जाती है। वह अब सारी बातें बिनती से उसी तरह कहता है जिस तरह वह सुधा से कहता था। अब वह बीती बातों को भूला देता है और हर शाम पम्मी के साथ गुजारने लगता है।

एक दिन अचानक गेसू वहाँ आ जाती है। वह बताती है कि उसकी बहन फूल की शादी अख्तर के साथ हो गई और वह देहरादून के मैटर्निटी सेन्टर में काम सीख रही है, जिसका कोर्स पूरा हो गया है। अब वह किसी अस्पताल में काम करेगी।

---

१ डा. धर्मवीर भारती - 'गुनाहों का देवता' - पृ. २४३।

२ वही वही पृ. २६३।

जब चन्दर उससे सवाल करता है कि क्या वह ऐसा नहीं मानती कि, अख्तर ने उसे धोखा दिया तब वह बताती है कि -- "जिसको मैंने अपना सिरताज माना उसके लिए ऐसा ख्याल भी दिल में लाना गुनाह है। मैं इतनी गिरी हुई नहीं कि, यह सोचूँ कि, उन्होंने धोखा दिया।"[१] साथ ही वह बदला भी नही लेना चाहती है। वह कहती है -- "बदला, गुरेज, नफ़रत इससे आदमी न कभी सुधरा है न सुधरेगा! बदला और नफरत तो अपने मन की कमजोरी को जाहिर करते हैं। और फिर बदला मैं लूँ किससे ? उससे, दिल की तनहाइयों में मैं जिसके सिजदे पड़ती हूँ। यह कैसे हो सकता है।"[२]

चन्दर के दिल को गहरी ठेंस लगती है। वह सोचने लगता है कि, मैंने अपने विश्वास का मन्दिर भ्रष्ट कर दिया है .... मैंने सुधा के प्यार का गला घोंट दिया है। फिर वह पम्मी से दूर हटने लगता है। वह उसके दिल को तोड़ देता है और वह उससे टूटकर लखनऊ चली जाती है। बाद में पम्मी स्वीकार भी करती है कि, अपने रूप का जादू डालने के लिए ही उसने ऐसा किया था और अब वह अपने पति के पास जा रही है। वह अपने पति से माफी माँग लेना चाहती है।

सुधा जब गर्मियों में आती है तब भी चन्दर सुधासे रूखा बर्ताव करता है और सपने में स्नेह के प्रमाण के रूप में शरीर माँगता है। सुधा चीख उठती है बाद में जब वह आइने के सामने खड़ा रहता है, तब उसे अपनी ही छाया लताड़ देती है, उसे अहंकारी ठहराती है, स्वार्थी कहती है। उसी दिन वह गेसू के आमंत्रण पर उसके घर जाता है जहाँ उसे पता चलता है कि, सुधा जल्द ही आनेवाली है। चन्दर घर पहुँचता है तो उसे कैलाश का खत मिलता है कि वह ११ मई को दो दिन के लिए सुधा को लेकर आ रहा है। चन्दर घर साफ़ करवाता है, वह बेचैन हो उठता है। यहाँ तक कि वह सुधा को लेने स्टेशन पहुँचता है। लेकिन सुधा की तबीयत इतनी खराब है कि, उसे बार-बार उबकाई आ जाती है। उसे सुख रोग है। सुधा सफ़ेद पड़ गई है। अब वह पूजा-पाठ करने लगी है। सुधा में इतनी दीनता, विनय

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ. २६९-७०।

२ वही वही पृ. २७१।

आ गया है कि, वह बिल्कुल गंभीर हो गई है। एकदम भावहीन, शिष्ट बन गई है। उसका खाना भी इतना कम हो गया है कि, वह अब सिवा तिंबू के शरबत और खिचड़ी के और कुछ भी नहीं खाती है और वह भी एक वक्त! चन्दर से उसका दु:ख देखा नहीं जाता है और वह रो पड़ता है। सुधा उसे बताती है कि, पूजा-पाठ से मैंने तुम्हारे प्रति विश्वास को फिरसे प्राप्त कर लिया। वह बताती है कि, "हिन्दु-गृह तो एक ऐसा जेल होता है जहाँ कैदी को उपवास करके प्राण छोड़ने की भी इजाजत नहीं रहती अगर धर्म का बहाना न हो।"[१] चंदर भी उसे वह सब कुछ बता देता है जिसकी वजहसे उसने सुधा से नजरें फेर ली थी।

उसी दिन सुधा ने उस से कहा कि, "तुम बिनती से ब्याह कर लो।"[२] कैलाश और पापा की भी यही मर्जी है। चन्दर इन्कार कर देता है। दूसरे दिन सुधा उसकी पूजा करती है और चन्दर के पैर फूलों से भर देती है। उसके लिए वह कपड़े सिलाने बैठतो है, तभी उसकी तबीयत खराब हो जातो है। कैलाश जो सुधा को चन्दर के पास छोड़ एक काम के लिए रीवाँ गया था, वापस आ जाता है और सुधा की तबीयत और भी खराब हो जाती है। जाते वक्त कैलाश भी चन्दर को बिनती से ब्याह करने की सलाह देता है। थोडे दिन बाद उसे बिनती और डा. शुक्ला व्दारा सरकारी नौकरी के लिए दिल्ली बुलाया जाता है। वह पेशोपेश में पड़ जाता है। लेकिन उसे सुधा को दिया वादा याद आता है कि, वह काम करेगा, उँचा बनेगा। एक दिन डा. शुक्ला का एक तार उसे मिल जाता है और वह दिल्ली चला जाता है। ट्रेन में उसकी बुआजी से मुलाकात हो जाती है जो कानपुर जा रही है।

दिल्ली में जाकर वह देखता है कि सुधा की हालत बहुत ही खराब है। उसका गर्भपात हो गया है। बहुत खून बह गया है। खून के बहने से वह सफ़ेद पड़ गई है। चन्दर उसकी सेवा में लग जाता है। बिनती, डा. शुक्ला और कैलाश भी वही है। सुधा बुखार में बड़बड़ाने लगती है। फिर उसे अस्पताल लाया जाता है।

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ. ३०९।

२ वही वही पृ. ३२१।

वहाँ उस पर इलाज शुरु होते हैं। वह पापा से माफी माँग लेती है, चन्दर के पैर छू लेती है और बोलते-बोलते ही उसका सिर चन्दर की बाँह पर लुढ़क जाता है और उसके प्राणपखेरू उड़ जाते है।

डा. शुक्ला बेटी के गम में पागल से हो जाते हैं। वे पूजा-पाठ छोड़ देते है और छुट्टी लेकर प्रयाग चले आते हैं। बिनती भी खामोश पीड़ा की अवशेष मात्र बची रहती है और वह तो एकदम पत्थर की तरह शान्त हो जाता है। वह पंद्रह दिनों में बुढ़ा-सा लगने लगता है। जेठ दशहरे के दिन जब वह उसके फूल छोड़ने जाता है तो बिनती भी उसके साथ जाती है। बिनती अपने आँसूओं की बाढ़ को रोक न पाती है। और उसे चूप कराते कराते चन्दर उस रात से बिनती की माँग भर देता है और कहता है .... "बिनती, रोओ मत! मेरी समझ में नहीं आता कुछ भी! रोओ मत! चुप हो जाओ रानी! मैं अब इस तरह कभी नहीं करूँगा - उठो! अब हमीं दोनों को निभाना है बिनती!"

चन्दर के व्दारा बिनती को स्वीकार किये जाने के साथ ही यह कथानक समाप्त होता है।

समीक्षा -

'गुनाहों का देवता' एक तथाकथित आदर्शोन्मुख यथार्थवादी सामाजिक उपन्यास है। इसमें भारती जी ने मध्यवर्गीय जीवन में व्याप्त समस्याओं का विस्तृत एवं मनोरम ढ़ंग से निरूपण किया है।

वस्तुत: चन्दर, सुधा, पम्मी तथा बिनती के पारस्पारिक सम्बन्धों में कई समस्याएँ एक साथ संपृक्त हैं। चन्दर का तीनों नारी पात्रों से सम्बन्ध रहा है। समय के अन्तराल के साथसाथ यह सम्बन्ध बदलते गये हैं। "वास्तव में 'गुनाहों का देवता' आस्कर वाइल्ड के 'दि पिक्चर ऑफ डोरिअनग्रे' से काफी प्रभावित है।" २

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ. ३५१।

२ डा. चन्द्रकान्ता वर्मा-'डा. धर्मवीर भारती की गद्य कृतियों का अनुशीलन' पृ. ४१।

उपन्यास का कथानक तीन खण्डों में विभक्त है और अंत में एक छोटा-सा उपसंहार है।

मुख्य कथा का संबंध सुधा तथा चन्दर के चरित्र से विशेष रहा है। इस कथा में प्रत्यक्ष योग देनेवाले पात्रों में कैलाश, डा. शुक्ला, बिनती के नाम उल्लेखनीय हैं। गेसू, रविन्द्र बिसरिया, बुआ, प्रमिला डिक्रूज आदि पात्रों का जहाँ मुख्य कथा में प्रत्यक्ष योग अधिक न होते हुए भी इनसे नायक और नायिका के चरित्रोद्घाटन में विशेष सहायता मिली है वहाँ चन्दर के चरित्र को उद्घाटित करने में सुधा तथा बिनती के साथ ही गेसू तथा पम्मी का प्रत्यक्ष योगदान रहा है। अनेक बार भटकने पर उसे सही दिशा-निर्देश इन्हीं पात्रों के कथनों एवं कृत्यों से प्राप्त होता है। बर्टी के द्वारा लेखक ने चन्दर के चरित्र पर एक विशेष प्रभाव अंकित करना चाहा है। प्यार के नाम पर स्वयं पिटनेवाला किस प्रकार पुन: शादी कर सुखी जीवन व्यतीत करने का सहज समझौता कर लेता है। इसका भी जिक्र इसमें किया गया है।

इस उपन्यास में भारती जी ने सुधा और चन्दर की कथा के साथ-साथ बुआ और बिनती, गेसू की घटना, बर्टी और पम्मी की कथा पर भी प्रकाश डाला है। इसमें चन्दर और सुधा के सम्बन्धों में घनिष्टता की पराकाष्ठा आ जाती है और बाद में सुधा की शादी कैलाश मिश्र के साथ होती है। सुधा कैलाश के साथ शारीरिक संबंध तो रख पाती है पर मानसिक रूप से वह चन्दर की होकर रह जाती है। यहाँ लेखक ने दोनो के जीवन में उदासीनता की पराकाष्ठा दिखलाई है। चंदर को सुधा के अभाव में जीवन व्यर्थ प्रतीत होता है, इसलिए तनहाई को समाप्त करने के लिए वह पम्मी को अपनी बाहुपाश मे आबध्द करना चाहता है और पम्मी भी उसे चाहने लगती है पर चन्दर वहाँ भी नहीं टिक पाता।

मुख्य कथा के साथ-साथ कुछ प्रासंगिक कथाएँ भी इस उपन्यास में समायोजित की गई है। पम्मी तथा बर्टी दोनों भाई-बहन इकट्ठे जीवन व्यतीत करते हैं। चन्दर डा. शुक्ला के कार्य से जब पम्मी को मिलने जाता है तो पाठक वहाँ के दृश्य से चौंक उठता है। बर्टी का पागलपन चरमोत्कर्ष पर पहुँचा प्रतीत होता है। बर्टी का

पश्चात् विवाह कर पूर्व पत्नी को भुलाना, व्यक्ति के परिस्थिति सापेक्षा परिवर्तन की सूचना देता है। पम्मी का प्रत्यक्ष संबंध मुख्य कथा से रहा है। वह चन्दर के उदास क्षणों में उसकी सहायिका भी बनी है और चन्दर भी कई बार उससे संबंध बनाने को लालायित हुआ, पर सफलता नहीं मिल सकी।

शहरी वातावरण से ग्रामीण आँचलिकता को भी भारती छू सकते हैं। बुआ व्दारा बिनती को कोसना उसका स्वभाव बन चुका था। बिनती के प्रसंगों में एक खटकनेवाला प्रसंग है। भारती ने बिनती के मुँह से कहलाया है --"देहाती लड़कियां शहर की लड़कियों से कहीं ज्यादा होशियार होती है ....। वहाँ इतना दुराव, इतना गोपन नहीं है ... ब्याह के पहले ही वहाँ लडकियाँ सभी कुछ..." यहाँ भारती का रोमांटिक और नागर मन देहात के विरुध्द अवहेलना से मुखर हो उठा है।

इस कथानक में गेसू की प्रेमकहानी को भुलाया नहीं जा सकता। गेसू अख्तर से प्यार करती है और वह अपने प्यार को शरीर निरपेक्ष रखने का अस्वाभाविक विचार मन में आने तक नहीं देती है। अख्तर का विवाह फूल से होता है। अख्तर से प्रतिशोध लेने की भावना उसे छू तक नही गई है। "लेखक ने गेसू के माध्यम से समाज की उन लड़कियों की चर्चा की है, जो कैशोर्यावस्था में दीवा-स्वप्न देखती है, लेकिन बाद में उन्हें परिस्थितियों से समझौता करना पड़ता है। कथा की दृष्टि से गेसू महत्वपूर्ण पात्र है। वह प्रेम की एक अनूठी, निराली प्रतिमा है, जिसे सिर्फ मंदिर मे रख कर पूजा जा सकता है। फिर भी पाठक की सहानुभूति उसे नही मिल पाती है क्योंकि आज मानव को आदर्श नहीं यथार्थ चाहिए।" [१]

'गुनाहों का देवता' का पात्र चन्दर अपने आसपास के जीवन और व्यक्तियों के प्रति अपने को बेहद उत्तरदायी अनुभव करता था - इस कथन का प्रमाण हमे उपन्यास में कहीं नहीं मिलता। उसने राजनीति में कभी डूबकर हिस्सा नहीं लिया - यह कहने के स्थान पर लेखक को कहना चाहिए था कि वह राजनीति से

---

१ डा.चन्द्रकांत वर्मा -'डा.धर्मवीर भारती का गद्यकृतियों का अनुशीलन'- पृ.३७।

पूरी तरह तटस्थ था । इस कथानक में प्रेम का चक्र मध्यवर्गीय युवक-युवतियों में विशेष करवट लेता रहता है । प्रेम के वासनात्मक एवं उदात्त रूप के साथ ही इसी संदर्भ में वैयक्तिक पारिवारिक एवं सामाजिक विघटन भी अनेक प्रसंगों में चित्रित हुआ है । सुधा कैलाश को चन्दर के कहने पर पति रूप में मान लेती है - शारीरिक उत्सर्ग भी करती है पर मानसिक दृष्टि से वह चन्दर को विस्मृत नहीं कर पाती है । यही कारण है कि दमित प्रेम कई बार वस्तुस्थिति में प्रकट नहीं हो पाता । परिणामत: सुधा की मृत्यु होती है और चन्दर का पतित व्यक्तित्व सम्मुख आता है ।

"भारती की प्रथम औपन्यासिक रचना 'गुनाहों का देवता' चन्दर और सुधा के किशोर जीवन की प्रगाढ़ प्रेमकहानी ही तो है और अगर थोड़ी गहराई से देखा जाय तो सुधा के जीवन की समस्या (विवाह के सम्बन्ध में) भी छायावादी समस्या ही है जिसके कारण उसका जीवन पीड़ा सिसकियों का पुंज बन गया ।" [१]

इसमें कथा का आरंभ एवं अन्त स्पष्टत: झलकता है । चन्दर तथा सुधा के पारस्परिक प्रारम्भिक आकर्षण से कथा आरंभ होती है । सुधा का न चाहते हुए भी कैलाश से विवाह होना इसका मध्य माना जा सकता है तथा सुधा की मृत्यु से वस्तुत: इस उपन्यास का अंत ही समझना चाहिए । शेष के अंश तो मात्र चन्दर के व्यक्तित्व का एक अन्य पहलू स्पष्ट करते हैं । साथ ही लेखक को सुधा की अंतिम इच्छा भी पूर्ण करवानी थी और वह है बिनती को अपनाने की ! सुधा की मृत्यु के पश्चात् चन्दर सुधा के प्रण-निर्वाह हेतु बिनती का हाथ थाम लेता है और इसी के साथ कथानक का अंत हो जाता है ।

'गुनाहों का देवता' नाम की सार्थकता प्रतिपादित करने के लिए लेखक ने अनेक पात्रों के मुख से चन्दर के लिए 'देवता' शब्द का प्रयोग करवाया है ।

---

१ डा. हरिवंश प्रसाद पांडये -'धर्मवीर भारती : चिंतन और कला'- पृ.९ ।

प्रस्तुत उपन्यास में भारती जी ने एक साथ कई प्रासंगिक कथाओं का समायोजन किया है जिनके व्दारा मध्यवर्गीय जीवन की किसी विशिष्ट वृत्ति का द्योतन करना चाहा है। इस प्रकार की सभी कथाओं का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से मेल मुख्य कथा से अवश्य रहा है।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि, 'गुनाहों का देवता' यह एक मध्यवर्गीय जीवन की कहानी है, इसमें प्रेम के विविध पहलूओं का चित्रण उपन्यासकारने पात्रों के माध्यम से किया है। घटनाएँ इस तरह घटती चली जाती है कि, पाठक पूरा उपन्यास पढ़ने के लिए बाध्य हो जाते है। आरंभ से लेकर अंत तक उपन्यासकार पाठकों को यह सोचनेपर मजबूर कर देता हैं कि, आगे क्या होनेवाला है। सिर्फ डेढ़ साल की घटनाओं के चित्रण में भी उपन्यासकार ने रंजकता, रोचकता लाने का प्रयास किया है जिसमें वे सफल हुए है। चंदर और सुधा की मुख्य कथा को आगे बढ़ाने का, उसमें रोचकता लाने का कार्य अन्य सहायक कथाओं ने किया है। इन सभी वजहों से उपन्यास की कथावस्तु अत्यंत सुंदर, प्रभावशाली, कौतुलहवर्धक तथा रोचक बन पड़ी है।